मानू में रीतिकाल पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

9 फरवरी 2026 दिन सोमवार को मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के हिन्दी विभाग द्वारा अल्लामा इक़बाल सभागार में "हिंदी साहित्य में रीतिकालीन काव्य परंपरा" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. सैयद ऐनुल हसन (कुलपति, मानू, हैदराबाद), विशिष्ट अतिथि प्रो. चन्द्रा मुखर्जी और प्रो. गुलफिशाँ हबीब, बीज वक्ता प्रो. एम. श्यामराव (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय) तथा संयोजक प्रो. पठान रहीम खान (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मानू, हैदराबाद) उपस्थित रहे।

स्वागत वक्तव्य में प्रो. पठान रहीम खान ने रीतिकालीन काव्य परंपरा की ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डाला। बीज वक्ता प्रो. एम. श्यामराव ने इसे छायावाद से जोड़ते हुए बिहारी, केशवदास, पद्माकर, देव और घनानंद जैसे कवियों के उदाहरणों के माध्यम से काव्यशास्त्र और रचनात्मकता के संतुलन को रेखांकित किया। प्रो. चन्द्रा मुखर्जी ने रीतिकालीन काव्य को सामंती समाज, दरबारी संस्कृति और शास्त्रीय सौंदर्यबोध से जोड़ते हुए उसकी बहुआयामी व्याख्या प्रस्तुत की, जबकि प्रो. गुलफिशाँ हबीब ने संगोष्ठी विषय की सराहना करते हुए विभाग को बधाई दी। अध्यक्षीय वक्तव्य में पद्मश्री प्रो. सैयद ऐनुल हसन ने रीतिकालीन काव्य को हिंदी साहित्य की निरंतरता में एक सेतु बताया, जिसने भक्तिकाल की भावधारा को आधुनिक काव्य चेतना से जोड़ा।

उद्घाटन सत्र का संचालन महफूज आलम (शोधार्थी, हिन्दी विभाग) ने किया और धन्यवाद अनिल कुमार (शोधार्थी, हिन्दी विभाग) ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विभाग के अध्यापकगण प्रो. करन सिंह ऊटवाल, प्रो. जी. वी. रत्नाकर, प्रो. दोड्डा शेषु बाबु, डॉ. अबू होरैरा, डॉ. साहिबा खातून, डॉ. जैनब खातून सहित हिन्दी विभाग के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त इस संगोष्ठी में हैदराबाद के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों से आए प्राध्यापकगण ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर इस सेमीनार को सफल बनाया। यह सेमीनार वैचारिक रूप से समृद्ध और अकादमिक दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हुआ, जिसने आगामी विमर्शों के लिए ठोस आधार प्रदान किया।